कहीं केवल काले रंग में चित्र बने हैं। वेशभूषा भारतीय है। पाश्चात्य शैली में चित्रण करने वालों में राजा रवि वर्मा सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे हैं।

(ङ) कालीघाट की चित्रकला — कुछ चित्रकारों ने 'काली-घाट' और 'काली मंदिर' के भक्तों के मार्ग पर चित्र बनाए। ये चित्र पाश्चात्य शैली के हैं। टेम्परा माध्यम से चित्र बनाए गए हैं। ये सपाट, गहरे व चमकीले हैं और इनका प्रयोग सीमित है। कहीं-कहीं केवल काले रंग से चित्र बने हैं। चित्रों के विषय धार्मिक और सामाजिक हैं। अधिकांशतः बंगाली बाबुओं के जीवन-चरित्र को ~~चित्र~~ चित्रित किया गया है।

(च) आधुनिक भारतीय चित्रकला — (19वीं शताब्दी से आज तक) — अंग्रेजों द्वारा 1850 में पाश्चात्य कला शिक्षा हेतु तीन महानगरों (कोलकाता, चेन्नई,

मुंबई) में कला संस्थान खोले गए। परिणामस्वरूप कला जगत् में एक नवीन आंदोलन का सूत्रपात हुआ जिसे पुनर्जागरण काल के नाम से जानते हैं। आधुनिक कला को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं —

(1) पुनर्जागरण काल —
(क) बंगाली शैली या ठाकुर शैली।
(ख) बंगाली शैली से हटकर नई शैली में काम करने वाले कलाकार।

(क) बंगाल आंदोलन — कलकत्ता कला संस्थान में नियुक्त प्राचार्य ई० बी हैवेल ने अवनीन्द्रनाथ टैगोर को भारतीय कलाओं की ओर आकृष्ट किया। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने प्राचीन भारतीय कला का पुनरुद्धार किया और अपने शिष्यों में भारतीय कला के प्रति जागृति उत्पन्न की, जिससे बंगाल आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस शैली के प्रमुख चित्रकार हैं - अवनीन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बसु, असित कु० हल्दार, देवी प्रसाद राय चौधरी,

क्षितीन्द्र नाथ मजूमदार, अबदुर्रहमान चुगताई तथा अकील बंधु।

(ख) बंगाल शैली से अलग नवीन पद्धति में कार्य करने वाले प्रमुख चित्रकार हैं— यामिनी राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल, गगनेन्द्रनाथ टैगोर।

(2) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कला — प्रयोगवादी कला या आधुनिक काल की प्रचलित शैली विकृति (Distortion) है, जिसमे चित्रों को वास्तविक आकार न देकर कुछ बड़ा या छोटा कर दिया जाता है।